एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कटहल की खेती

डॉ. विनय कुमार एवं *डॉ. राम भरोसे
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rbharose1@gmail.com

कटहल के पौधों की रोपाई बीज के रूप में की जाती है। बीजों द्वारा उगाये गए पौधों पर 5 से 6 वर्ष का समय लग जाता है। कटहल के पौध को बीजों द्वारा तैयार करने के लिए आपको पहले पके हुए कटहल से बीज निकालने हैं। बीजों को निकालने के बाद इन्हें ज्यादा दिन के लिए ना रखे, इन्हें तुरंत ही मिट्टी में लगा देना चाहिए। पौध तैयार करने के लिए पॉलीथिन बैग लेना है, पॉलीथिन बैग लेने के बाद इसके अंदर 80 प्रतिशत सामान्य मिट्टी और 20 प्रतिशत पुरानी गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट मिलाकर इसे भर लेना है। इसके बाद कटहल में से निकाले गए बीज को लगभग दो इंच की गहराई में रोपाई करें। रोपाई के बाद इनमें नमी बनाये रखे। यह बीज लगभग एक सप्ताह में उगना शुरू हो जाते हैं। जब पौधों पर तीन से चार पत्तियां आ जाएँ, तो इनकी रोपाई की जा सकती हैं। कटहल के पौधों को बनाने के लिए दो विधियों को इस्तेमाल में लाया जाता है।

- ग्राफ्टिंग विधि
- बीज द्वारा

कटहल को विश्व का सबसे बड़ा फल भी कहते हैं। इसका पूर्ण विकसित पौधा कई वर्षो तक पैदावार देता है। इसके पके हुए फल को ऐसे भी खाया जा सकता है। किन्तु विशेषकर इसे सब्जी के रूप में खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए इसे फल और सब्जी दोनों ही कह सकते हैं। कटहल में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते है जैसे– आयरन, कैल्शियम, विटामिन ए, सी, और पौटेशियम बड़ी मात्रा में भी पाए जाते हैं, जो कि मानव शरीर के लिए लाभदायक होते हैं। एक वर्ष में कटहल के पेड़ से दो बार फलों को प्राप्त किया जा सकता है। कटहल की खेती किसानों के लिए आय की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसकी खेती से किसानों को बहुत अच्छा मुनाफा होता है। कटहल कच्चा हो या पका हुआ, इसको दोनों प्रकार से उपयोगी माना जाता है, इसलिए बाजार में इसकी मांग ज्यादा होती है। भारत में कटहल की खेती बहुत पुरानी है। यह फल पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, केरल, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में बहुतायत से उगाया जाता है। इसके अलावा, यह पहाड़ों में भी अच्छा उत्पादन देता है। कटहल ताजे फलों के अलावा अचार, सब्जी, चिप्स और मिठाई बनाने में भी खाया जाता है। कटहल की बाजार मांग आजकल तेजी से बढ़ रही है क्योंकि इससे जैम, जैली और प्रोसेस्ड खाना भी बनाया जाता है। इसकी खेती करना किसानों के लिए लाभदायक हो सकता है।

उपयुक्त जलवायु, मिट्टी और तापमान– कटहल को किसी भी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन कटहल की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी को उपयुक्त माना गया है। इसके अलावा इस बात का विशेष ध्यान रखे की भूमि जल–भराव वाली न हो। इसके खेती में भूमि का पी.एच मान 7 के आस–पास होना चाहिए। इसकी खेती शुष्क एवं शीतोष्ण दोनों जलवायु में सफलतापूर्वक कर सकते हैं, क्योंकि यह उष्णकटिबंधीय फल है। इसलिए इसकी खेती के लिए शुष्क और नम, दोनों प्रकार की जलवायु उपयुक्त माना गया है। इसके पौधे अधिक गर्मी और वर्षा के मौसम में आसानी से वृद्धि कर लेते है, किन्तु ठंड में पाला गिरने से इसकी फसल के लिए हानिकारक होता है। इसके साथ ही 10 डिग्री से नीचे का तापमान पौधों की वृद्धि के लिए हानिकारक होता है।

कटहल की उन्नतिशील किस्में

- भा0कृ0अनु0प0– खजवा, स्वर्ण मनोहर, स्वर्ण पूर्ति (सब्जी के लिए) आदि प्रमुख है।
- नरेन्द्र देव कृषि वि0वि0– एन0जे0 –1, एन0जे0 –2, एन0जे0–15,और एन0जे0–3 आदि प्रमुख है।
- केरल कृषि वि0वि0– मुत्तम वरक्का प्रमुख है।
- सफेदा– यह जल्दी पकने वाली किस्म है और इसका गूदा नरम और मीठा होता है।
- कुंदरू– इसकी फली बड़ी होती है और मांसल गूदा होता है, व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त।
- नागालैंड कटहल– उत्तर–पूर्व भारत में लोकप्रिय किस्म जो स्वाद में लाजवाब होती है।
- स्वर्ण मनोहर– छोटे आकार के पेड़ में बड़े–बड़े एवं अधिक संख्या में फल देने वाली यह एक उम्दा किस्म है। मध्यम घने छत्रक वाले इस किस्म में फरवरी के प्रथम सप्ताह में फल लग जाते हैं। जिनको छोटी अवस्था में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। इस किस्म के फल वनज 15 से 20 किलोग्राम होता है। इसके कोये (बीज) का आकार बड़ा, संख्या अधिक और मिठास ज्यादा होता है। इसकी प्रति वृक्ष औसत उपज 300 से 350 किलोग्राम है।
- स्वर्ण पूर्ति– यह सब्जी के लिए एक उपयुक्त किस्म है। इसका फल छोटा 3 से 4 किलोग्राम, रेशा कम, बीज छोटा एवं पतले आवरण वाला तथा बीच का भाग मुलायम होता है। इस किस्म के फल देर से पकने के कारण लम्बे समय तक सब्जी के रूप में उपयोग किये जा सकते हैं। इसके वृक्ष छोटे तथा मध्यम फैलावदार होते हैं, जिसमें 80 से 90 फल प्रति वर्ष लगते हैं।
- कटहल की अन्य उन्नत किस्में रसदार, सिंगापुरी, गुलाबी, रुद्राक्षी हैं सिंगापुरी किस्में वर्ष में सिर्फ एक बार फल देती है। इसके अलावा कुछ किस्में वर्ष भर फल देती है।

पौध प्रवर्धन

बीजों द्वारा– कटहल के पौधों की रोपाई बीज के रूप में की जाती है। बीजों द्वारा उगाये गए पौधों पर 5 से 6 वर्ष का समय लग जाता है। यदि आप कटहल के पौध को बीजों द्वारा तैयार करना तो उसके लिए पहले पके हुए कटहल से बीज निकालने हैं। बीजों को निकालने के बाद इन्हें ज्यादा दिन के लिए ना रखे, इन्हें तुरंत ही मिट्टी में लगा देना चाहिए। पौध तैयार करने के लिए गमला या पॉलीथिन बैग लेना है, गमला या पॉलीथिन बैग लेने के बाद इसके अंदर 80 प्रतिशत सामान्य मिट्टी और 20 प्रतिशत पुरानी गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट मिलाकर इसे भर लेना है। इसके बाद कटहल में से निकाले गए बीज को लगभग दो इंच की गहराई में रोपाई करें। रोपाई के बाद इनमें नमी बनाये रखने के लिए पानी डालते रहें। यह बीज लगभग एक सप्ताह में उगना शुरू हो जाते हैं। जब पौधों पर तीन से चार पत्तियां आ जाएँ, तो इनकी रोपाई तैयार खेत में की जा सकती हैं।

ग्राफ्टिंग या कटिंग विधि– ग्राफ्टिंग या कटिंग द्वारा तैयार किये गए कटहल के पौधे पर लगभग तीन से चार साल में फल आना शुरू हो जाते है। कटहल की व्यापारिक खेती के लिए ग्राफ्टिंग विधि से तैयार पौधे का उपयोग करें। क्योंकि इस विधि से पौधे को तैयार करना बहुत आसान होता हैं। ग्राफ्टिंग विधि से पौध तैयार करने के लिए सबसे पहले इसके बीजों द्वारा उगाया गया कटहल का पौधा लेना है। इसके बाद एक बड़े कटहल के पेड़ की कटिंग लेनी है। कटिंग लगभग तीन इंच की लेनी है। जिसकी मोटाई पेन्सिल की बराबर होनी चाहिए। कटिंग को लेने के बाद कटहल के पौधे के तने को बीच में से काटकर उसके अंदर लगभग तीन इंच का चीरा लगाना है। कटिंग को पेना करके चीरा लगे हुए तने के अंदर फंसा दें। इसके बाद इसके ऊपर कसकर टेप या पॉलीथिन बांध देनी है। इसके बाद इसमें से जड़े निकल आती है, उन्हें काट गड्ढे में लगा दिया जाता है।

रोपाई का समय– कटहल के तैयार पौधे एवं बीज से रोपाई का सही समय जून से सितम्बर का महीना होता है। कटहल के पौधे की रोपाई करने से पहले खेत को तैयार करने के लिए एक गहरी जुताई करने के बाद पाटा चलाकर भूमि को समतल कर लें। सामतल भूमि पर 8 से 10 मीटर की दुरी पर 1.0 मीटर व्यास एवं 1.0 मीटर गहराई के गड्ढे तैयार करें। इन सभी गड्ढों में 20 से 25 किलोग्राम गोबर की साड़ी खाद अथवा कम्पोस्ट, 250 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 500 ग्राम म्युरियेट आफ पोटाश, 1.0 किलोग्राम नीम की खल्ली तथा 10 ग्राम थाइमेट को मिटटी में अच्छी प्रकार मिलाकर भर देना चाहिए। कटहल के पौधों की रोपाई की उपयुक्त समय जुलाई से सितम्बर है।

सिंचाई– कटहल के पौधों को अधिक सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती हैं। इसके पौधों की रोपाई के तुरंत बाद इसकी पहली सिंचाई कर लेनी चाहिए। इसके बाद गर्मियों के मौसम में इसे 15 से 20 दिन के अंतराल में जब पौधे के आसपास की भूमि अधिक सूखी दिखाई दें, तो पौधे की सिंचाई कर लेनी चाहिए। इसके बाद इसे दो से तीन और सिंचाई की आवश्यकता होती हैं। यदि बारिश का मौसम है, तो इसके पौधों को जरूरत पड़ने पर पानी देना चाहिए। जब पौध पर फूल आना शुरू हो जाएं, तो इस दौरान सिंचाई नहीं करें।

खाद और उर्वरक– अच्छी पैदावार के लिए संतुलित उर्वरकों का प्रयोग जरूरी है। एक सामान्य उर्वरक योजना इस प्रकार हो सकती है। कटहल के पेड़ में प्रत्येक वर्ष फलन होती है। अतः अच्छी पैदावार के लिए पौधे को खाद एवं उर्वरक पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए। प्रत्येक पौधे को 20 से 25 किलोग्राम गोबर की सड़ी हुई खाद, 100 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 100 ग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष की दर से जुलाई माह में देना चाहिए। तत्पश्चात् पौधे की बढ़वार के साथ खाद की मात्रा में वृद्धि करते रहना चाहिए। जब पौधे 10 वर्ष के हो जाये, तब उसमें 80 से 100 किलोग्राम गोबर की खाद, 1.0 किलोग्राम यूरिया, 2.0 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 1.0 किलोग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष देते रहना चाहिए। खाद एवं उर्वरक देने के लिए पौधे के छत्रक के नीचे मुख्य तने से लगभग 1 से 2 मीटर दूरी पर गोलाई में 25 से 30 सेंटीमीटर गहरी खाई में खाद के मिश्रण को डालकर मिट्टी से ढक देना चाहिए।

पुष्पन एवं फलन– कटहल एक मोनोसियस पौधा है, जिसमें नर एवं मादा पुष्पक्रम एक ही पेड़ पर परन्तु अलग–अलग स्थानों पर आते हैं। नर फूल, जिसकी सतह अपेक्षाकृत चिकनी होती है। नवम्बर से दिसम्बर में पेड़ की पतली शाखाओं पर आते हैं। ये फूल कुछ समय बाद गिर जाते है। मादा फूल मुख्य तने एवं मोटी डालियों पर जनवरी से फरवरी में आते हैं। कटहल एक परपरागण फल है, जिसमें परागण समकालीन नर पुष्प से ही होता हैं। यदि मादा फूल में समान परागन नहीं होता है तो फल विकास सामान्य नहीं होता है। फल जनवरी–फरवरी से जून–जुलाई तक विकसित होते रहते हैं। इसी समय में फल के अंदर बीज का विकास होता है और अन्ततः जून से जुलाई में फल पकने लगते हैं।

कटहल में लगने वाले कीट एवं नियंत्रण– ऐसे तो कटहल के पेड़ में कीट का प्रकोप बहुत कम होता है लेकिन इसमें लगने वाला प्रमुख कीट है।

- ✓ **मिली बैग–** यह कीट फल–फूल एवं डंठलों का रस चूसते हैं जिससें फल तथा फूल गिर जाता है। इसकी रोकथाम के लिए मई–जून में बगीचे की जुताई कर देनी चाहिए। इसके उपचार के लिए 3 मिली. इंडोसल्फान प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ✓ **तना छेदक–** यह कीट पेड़ के तने में छेदकर सुरंग बना देते हैं। इससे अन्दर के जीवित भाग को खाते रहते हैं। अगर इस कीट का प्रकोप बढ़ जाता है तो पेड़ की डालियाँ एवं तना सुख जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए पौधों के तना एवं डाली पर जहाँ छेद नजर आयें उसे केरोसिन तेल में रुई भिंगोकर भर दें और छेद के मुह को मिट्टी से भरे दें।
- ✓ **माहू–** अवयस्क तथा ब्यस्क किट पत्तियों , टहनियों , फूलो तथा फलो का रस चूसते है, प्रभावित पौधों कि बृद्धि रुक जाती है, और उपज पर प्रति कुल प्रभाव पड़ता है। इसकी रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1.0 मिलीलीटर को 1.0 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए या डाइमिथिएट 30 ईसी का 1.0 से 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना उत्तम रहता हैं।

कटहल में लगने वाले रोग एवं नियंत्रण–ऐसे तो कटहल के पेड़ में रोग का प्रकोप कम होता है लेकिन इसमें लगने वाला प्रमुख रोग गलन है। यह रोग राइजोपस आर्टोकारपाई नामक कवक के कारण होता है। इसका प्रकोप फल की छोटी अवस्था में होता है। इसके कारण कटहल के फल सडकर गिरने लगते हैं इस बीमारी की रोकथाम के लिए डाइथेन एम0 45 के 2 ग्राम प्रति लीटर में घोलकर 15 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 छिड़काव करना चाहिए।

- ➢ **फल सड़न रोग–** यह रोग राइजोपस आर्टीकापी नामक फफूंद के कारण होता है। जिसमें नवजात फल डंठल के पास से धीरे–धीरे सड़ने लगते हैं। कभी–कभी विकसित फल को भी सड़ते हुए देखा गया है। इसके नियंत्रण के लिए फल लगने के बाद लक्षण स्पष्ट होते ही ब्लू कॉपर के 3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का दो छिड़काव 15 से 20 दिनों के अन्तराल पर करें।
- ➢ **गुलाबी धब्बा–** इस रोग में पत्तियों को निचली सतह पर गुलाबी रंग का धब्बा बन जाता है। इसके नियंत्रण के लिए कॉपर जनित फफूंद नाशी जैसे कॉपर आक्सीक्लोराइड या ब्लू कॉपर के 3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करना चाहिए।

फल परिपक्वता– कटहल के फलों को विकास के साथ कई प्रकार से उपयोग में लाया जाता है। अति नवजात एवं मध्यम उम्र के फल (जिसे सब्जी के लिए प्रयोग किया जाता है) को उस समय तोड़ना चाहिए, जब उसके डंठल का रंग गहरा हरा, गूदा कठोर और कोआ मुलायम हो। इसके साथ–साथ बाजार में माँग के आधार पर तोड़ाई को नियंत्रित कर सकते हैंद्य ताजा फल खाने के लिए फलों को पूर्ण परिपक्वता पर तोड़ना चाहिए। साधारणत फल लगने के 100 से 120 दिनों बाद तोड़ने लायक हो जाते हैंद्य इस समय तक डंठल तथा डंठल से लगी पत्तियों का रंग हल्का पीला हो जाता है। फल के ऊपर के कांटे विरल हो जाते हैं एवं कांटों का नुकीलापन कम हो जाता है। फलों को किसी तेज चाकू से लगभग 10 सेंटीमीटर डंठल के साथ तोड़ने से दूध का बहाना कम हो जाता है। तोड़ते समय कटहल फलों को सीधा जमीन पर गिराने से फल फट जाते हैं। जिससे फल की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

कटहल से पैदावार– कटहल के एक हेक्टेयर के खेत में तकरीबन 150 पौधों को लगाया जा सकता है। जिससे एक वर्ष में एक पौधे से तकरीबन 500 से 1000 किलोग्राम की पैदावार प्राप्त हो जाती है।